© 2017 IJSRST | Volume 3 | Issue 7 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X
Themed Section: Science and Technology

पुराणों का काल निर्धारण

डा० विमल कुमार

अतिथि प्रवक्ता ,संस्कृत विभाग,

सी०एम०पी०डिग्री कालेज इलाहाबाद

भारतीय संस्कृति के संरक्षक पुराणों का स्थान संस्कृत वाङ्मय में अन्यतम् है। प्राचीन काल से आज तक इस सभ्यता की संस्कृति को संजोये हुए है।पुराण ही वह ग्रंथ हैं जो वेदों का भी ज्ञान कराने में अग्रणी भूमिका है।क्योकि कोई भी सामान्य मानव सर्वप्रथम पुराणों को ही सुनकर ही मोक्ष की ओर प्ररित होता है। भारतीय विद्वान पुराणों को वेद विद्या की भाँति अनादि एवं सनातन मानते हैं। वैदिक वाङ्मय के ही समान पौराणिक वाङ्मय, सर्वप्रथम ब्रह्म के ही निःश्वास से प्रादुर्भूत् हुआ है, अन्तर केवल यह है कि वैदिक वाङ्मय की उपलब्धि जिस रूप में हुई है बाद में भी उस रूप की ज्यों की त्यों रक्षा की गयी है उसकी पदावली में किसी भी प्रकार का परिवर्तन अग्राह्य माना गया है। इसका एक यह भी कारण है क्योंकि इसके संरक्षक विद्वान हैं। परन्तु पौराणिक वाङ्मय के साथ ऐसा नहीं पुराणों की रक्षा शब्दों में नहीं अपितु अर्थों में की गयी है।क्योंकि इसके संरक्षक समाज के वे लोग हैं जो केवल श्रद्धा से युक्त हैं । उसकी भाषा बदलती रही पर अर्थ वही रहा ब्रह्मा के मुख से निकली पुराण वाणी का जो अर्थ था वही आज भी पुराणों में पदशः परिलक्षित एवं भाषा में निहित है। अव्यक्त जन्म ब्रह्मा के उत्पन्न होते ही उनके मुख से पुराणों का उद्गम हुआ । [१] विद्वानों को पुराणों के काल निर्धारण की दृष्टि से प्रमाणिकता पर सन्देह उत्पन्न होता है। लेकिन पुराणों में इस बात का उल्लेख स्वतः प्राप्त होता है। कि पुराण की रचना वेदों से भी पूर्व हुई थी।[२] पद्मपुराण के इस श्लोक को पढ़ने से ऐसा प्रतीत होता है कि महर्षि वेदव्यास ने पुराणों का भी महत्त्व स्वीकार करने के लिए ऐसा कहा है ।क्योंकि पुराणों का स्थान वेद के संहिता आरण्यक, उपनिषद् और स्मृति आदि के बाद आता है। आचार्य शङ्कर ने पुराणों को स्मृति ग्रंथों के रूप में स्वीकार किया है। जिससे यह सिद्व होता है कि पुराणों का समय आचार्य शंकर के पहले का है। उच्छिष्ट ब्रह्म से वेदों के साथ पुराणों का भी आविर्भाव हुआ है।[३] जैसे वेद उस परमपुरुष परमात्मा का निःश्वास हैं उसी प्रकार से पुराण भी उस परम पुरुष परमात्मा के निःश्वास हैं। ऐसा कहा जाता है कि द्वापर के अन्त में परमर्षि वेदव्याास ने मानव मात्र के कल्याणार्थ अट्ठारह पुराणों की रचना की । उपर्युक्त विवेचन के आधार पर पुराणों का समय वेदों के बाद और उपनिषदों के पहले स्वीकार किया जाना चाहिए। क्योंकि ऋग्वेदादि सभी को वेदों के बाद का होना स्वीकार करते है।

भगवान्भाष्यकार शङ्कराचार्य,बाण और मयूरभट्ट द्वारा इस मार्कण्डेय पुराण का उल्लेख किया गया है। इस आधार पर भी इसको बहुत प्राचीन ग्रन्थ के रूप में स्वीकार किया जा सकता है। इस तथ्य से मार्कण्डेय पुराण के महत्त्व को समझा जा सकता है कि न केवल भारत अपितु सम्पूर्ण विश्व के लोगों ने सप्तशती चण्डी का आदर उतना ही किया जाता है जितना कि श्रीमद्भगवद्गीता। नेपाल के एक बौद्ध आचार्य को ८०६ ई० की एक हस्त लिखित सप्तशती ग्रन्थ को प्राप्त किया था। और यह सर्वविदित है कि प्राप्ति पहले होती है, उसका ही वर्णन प्रायः जाता है। क्योंकि ऐसा विभिन्न विद्वानों के काल निर्धारण पर किया गया है। पुराणों की रचना कब हुई इस विषय में विद्वानों में मतवैभिन्य दृष्टिगत होता है-पुराण शब्द का उल्लेख अथर्ववेद में प्राप्त होता है। जब यह कहा गया कि पुराणों की रचना उस परमपुरुष परमात्मा ने ऋग्वेदादि उपनिषदादि के बाद उच्छिष्ट रूप से किया गया ।[४] इस आधार पर पुराणों का रचना काल उपनिषदादि के बाद का होना स्वीकार किया जा सकता है।

गोपथब्राह्मण में पुराणों का स्मरण करते हुए कहा गया कि यह सभी वेद कल्प रहस्य ब्राह्मणग्रंथ, उपनिषद्, इतिहास, पुराण तथा स्वरों की रचना की गयी है ।[५] शतपथ ब्राह्मण में भी पुराणों का नाम आया है ।[६] बृहदारण्यक में इतिहास पुराण विद्या को उपनिषद् कहा गया है ।[७] छान्दोग्य उपनिषद् के अनुसार इतिहास और पुराण को पंचम वेद कहा गया है ।[८] आपस्तम्बधर्मसूत्र में न केवल का उल्लेख प्राप्त होता है अपितु श्लोक संख्या का भी उल्लेख किया गया है।[९] मार्कण्डेय पुराण में गुप्तकालीन संस्कृति की उदात्त भावना कूट कूट कर भरी है। इस आधार पर मार्कण्डेय पुराण का समय गुप्त काल का समय माना जा सकता है। श्रीमद्शङ्कराचार्य ,कुमारिलभट्ट, बाणभट्ट , महाभारत , कौंटिलीयअर्थशास्त्र एवं धर्मसूत्रों में भी पुराणों का उल्लेख प्राप्त है। [१०] पुराणों की रचना काल के सम्बन्ध में विदेशी विद्वानों का मत भी दृष्टव्य है। विद्वान- **"विन्डी डोनिजर"** इन्डोलाजिस्ट अध्ययन के आधार पर विविध पुराणों का समय निर्धारित करने का प्रयास किया है उन्होंने मार्कण्डेय पुराण का समय २५६ ई० पू० से ५५० ई० पू० निर्धारित किया है। वासुदेवशरण अग्रवाल ने मार्कण्डेय पुराण में गुप्तकालीन संस्कृति की उदात्त भावना से ओतप्रोत माना हैं। **राजस्थान जोधपुर और बीकानेर में स्थित दधिमाटी माता मन्दिर से प्राप्त हस्तलेख के आधार पर भी पुराणों का समय ६छठवीं शताब्दी ई०पू० का समय स्वीकार किया जा सकता है ।** इस वाक्य से यह निष्कर्ष निकलता है कि यह पुराण गुप्तकालीन रचना है। स्वर्ण युग की संस्कृति के निर्माण में जिन अनेक धार्मिक और सामाजिक संस्थाओं और विचारधाराओं से प्रेरणा मिल रही थी उन्हें हम इस पुराण के वर्णनों में स्पष्ट पहचान सकते हैं। [११]

यदि इतिहासकारों की व्याख्या पर विचार किया जाय तो यह निष्कर्ष निकलता है । कि पुराणों की पूर्व-सीमा ६०० ई०पू० के लगभग है और अन्तिम सीमा ५०० ई० के लगभग है। गौतम धर्मसूत्र, आपस्तम्ब धर्मसूत्र और महाभारत में पुराणों का उल्लेख है। इन धर्मसूत्रों का समय ५००ई० पू० से पहले का है ,अतः पुराणों का प्रारम्भ लगभग ६००ई० पू० हुआ होगा। पुराणों में गुप्त कालीन राजाओं का वर्णन है, परन्तु हर्ष (६०६-६४७ई०)और उसके बाद के राजाओं का उल्लेख नही है। इस आधार पर पुराणों की अपर सीमा ५०० ई ० के लगभग है। डॉ० काशी प्रसाद जायसवाल ने पुराणों की रचना का समाप्ति -काल ४९९ ई० माना है ।[१२]

सन्दर्भ सूची -

(१) इन्टरनेशनल गीता सोसाइटी पृष्ठ सं० १३।

(२) वंशानुचरितं तेषां वृत्तं वंशराजश्च मे। भागवद्पुराण १२/७

(३) उत्पन्नमात्रस्य पुरा ब्रह्मणोऽव्यक्त जन्मनः।

पुराणमेतद्वेदाश्चमुखेभ्योऽनुविनिःसृता।।

मार्कण्डेयपुराण ४७/२०

(४) पुराणम् सर्वशास्त्राणाम् प्रथमम् ब्रह्मणा स्मृतम्।

अनन्तरं च वक्त्रेभ्यो वेदास्तस्यविनिर्गताः।।पद्मपुराण(५३/०२)

(५) ऋचः सामानि छन्दांसि पुराणम् यजुषासह।

उच्छिष्टाज्जज्ञिरे सर्वं दिवि देव विपश्चितः।।

पद्मपुराण ५३/१

(६) ऋचः .....दिविश्रिताः ।।

अथर्ववेद (११/७/२४)

(७) एवमिमे सर्वे वेदाः .....सस्वराः ।।

(गोपथ प्रपाठक २)

(८) ''सोऽयमिति किन्चित् पुराणमाचक्षीत ।''

शतपथब्राह्मण(४/३/१३)

(९) ''इतिहासः पुराणं विद्या उपनिषद।''

बृहदारण्यकोपनिषद् २/४/११/

(१०) ऋग्वेदं भगवोऽध्येमि .....वेदानाम् वेदम्। छान्दोग्योपनिषद् ।

(११) अथपुराणे श्लोकानुदाहरन्ति,अष्टाशीतिसहस्राणीति ।।आपस्तम्बधर्मसूत्र २/२२/३५

(१२) जर्नल ऑफ द बिहार एण्ड उड़ीसा रिसर्च सोसाइटी, खण्ड ३, पृष्ठ २४७